सुमित्रानंदन पंत की कविता 'परिवर्तन का मूल कथ्य'

सुमित्रानंदन पंत की परिवर्तन कविता उनके काव्य संग्रह पल्लव में संग्रहित है। यह एक लंबी कविता है। इसकी रचना कवि ने सन् 1924 में की। विद्वानों ने इस कविता को 'ग्रैंड महाकाव्य'' कहा जाता है। इस कविता में कवि ने परिवर्तन को जीवन का शाश्वत सत्य कहा है। उनके अनुसार इस जगत में सब कुछ परिवर्तनशील है। यह आवश्यक है – परिवर्तन से ही जीवन में गति और विकास है। संसार में सुख–दुख जीवन के दो पहलू है। जीवन में दोनों का आना जाना निश्चित है। कवि कहते है इस संसार में दीनता और दुर्बलता है, इसीलिए अमन और प्यार जैसी भावनाएँ भी ह। यही भाव हमें एक दूसरे से जोड़ते हैं। जगत की परिवर्तनशीलता के कारण ही आज का दुख कल का आनंद बन जाता है। जीवन और मृत्यु भी इसी परिवर्तन के दो पहलू है। जीवन का अर्थ – जगत का निरंतर विकसित होना और मृत्यु का अर्थ है गति तथा क्रम का नष्ट हो जाना।

कवि परिवर्तन कविता के माध्यम से ये दर्शाते हैं कि सृष्टि के प्रारंभ में प्राकृतिक सौंदर्य में बनावटीपन नहीं था। सब कुछ सहज स्वाभाविक था। वे कहते हैं कि दुख और दीनता न थी। कवि पुरातन ऐश्वर्य को याद करते हैं – जहाँ हर दिशा वैभव से युक्त था सभी ओर सौंदय था। आज के परिवर्तित रूप में कृत्रिमता का स्वरूप दृष्टि गोचर होता है। अर्थात कवि अतीत के स्वर्गीय सुख की तुलना वर्तमान की सोचनीय दशा से करते हैं। कव आज से असंतुष्ट है। चारों ओर फैल हाहाकार को देख वह विचलित हो उठा है। वे चारो निर्दयी और निर्मम शक्ति का फैलाव देखते है। इसे 'परिवर्तन' की संज्ञा देते है। उनके अनुसार यह परिवर्तन कष्टप्रद है। यह मिलन सुख को विरह में बदल देता है, जन्म को मृत्यु, स्मित व आनंद को अश्रु और दुख में परिणत कर देता है। इस निर्मम परिवर्तन की विनाशकारी सत्ता का सामना करने का साहस किसी में नहीं। इसकी तुलना निरंकुश राजा से की गई है।

तुम नृशंस नृप से जगती पर चढ़ अनियंत्रित

करते हो संसृति को उत्पीड़ित पद मर्दित

क्वि इस निष्ठर परिवर्तन की तुलना शिव के तांडव नृत्य से करते हैं। शिव के तांडव में संहार के साथ निर्माण के तत्व भी शामिल है। कवि इस विनाश लीला में नवयुग आगमन भी देखता है। वह जानता है कि सहस्त्रों फन वाला वासुकी नाग (परिवर्तन) संसार का संहार कर रहा है, परंतु कल मानवता की विजय होगी। यह आशावाद वस्तुतः मानवता के प्रति आस्था का प्रतीक हैं, और यह इस कविता की प्राण शक्ति है।

जगत की सुंदरता का चाँद

सजा लांछन को भी अवदात

सुहाता बदल–बदल दिनरात

नवलता ही जग आह्लाद।

अशिव पर शिव की विजय भारतीय परंपरा की विरासत है। यह मानवता की विजय का प्रतीक है।